

जागरण की ज्यामिति

सुधरें-सँभलें तो काम चले — जीवन साधना
के वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक सूत्र

मनुष्य को न तो अभागा बनाया गया है और न अपूर्ण।
उसमें वे सभी क्षमताएँ बीज रूप से विद्यमान हैं,
आवश्यकता उनके समझने और उपयोग करने की है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर वो मेरे बच्चों से कहियेगा मेरे शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगश्रुति वेदभूषि तपोविष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रकृति का प्रपंच: सिनेमा का मायाजाल

बाजीगर का तमाशा देखने वाले दर्शकों की तरह, आम आदमी प्रकृति के इस खेल में अपनी सुध-बुध खो बैठता है। यह पूरा कमाल कैमरों और प्रोजेक्टर का बुना जाल है, पर मनुष्य इस छाया को वास्तविक मानकर उद्विग्न होता है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर वो मेरे बच्चों से कहियेगा मेरे शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

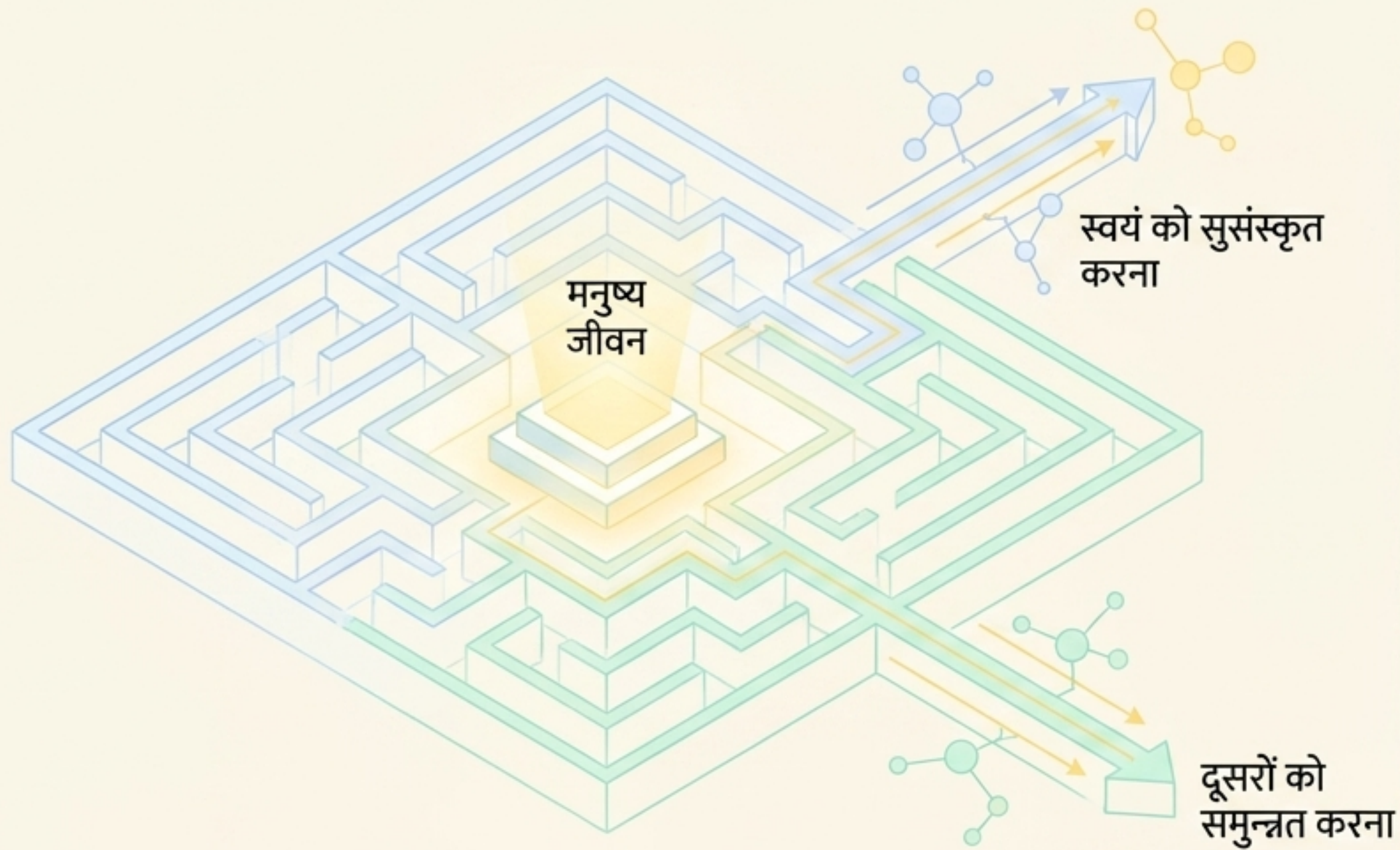
— पूज्य गुरुदेव युगश्रुति वेदमूर्ति तपोविष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भूल-भुलैया का भटकाव

इस दिवास्वप्न की प्रवंचना का पता तब चलता है जब नशे की खुमारी उतरती है। भगवान् के दरबार में पहुँचकर जब सौंपे गए कार्य की पूछताछ होती है, तब समझ आता है कि मनुष्य कितना गहरा भटका हुआ था।



“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

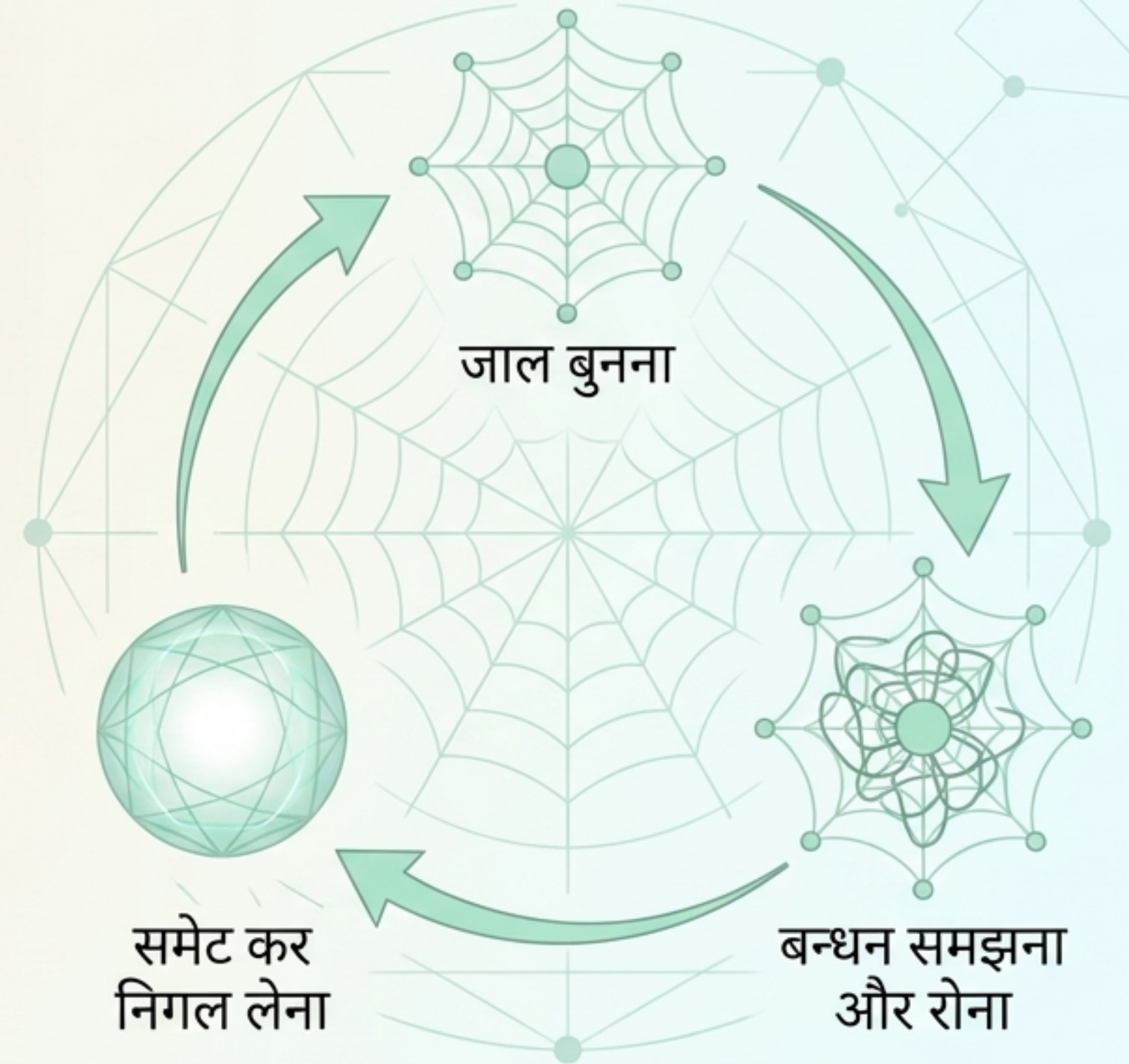
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जीवन की दोहरी धरोहर

शिक्षित, अशिक्षित, समझदार—सभी अन्धी भेड़ों की तरह गहरे गर्त में गिरते हैं।
मनुष्य जीवन स्रष्टा की बहुमूल्य धरोहर है, जो केवल दो प्रयोजनों के लिए सौंपा गया है।
इसके लिए अपनी योजना अलग बनानी पड़ेगी।

स्वनिर्मित बन्धन: मकड़ी का जीव-विज्ञान

मकड़ी अपना जाल स्वयं बुनती है और उसे बन्धन मानकर रोती है। पर जब वस्तुस्थिति की अनुभूति होती है, तो वह समूचा मकड़जाल समेट कर पेट में निगल लेती है। मनुष्य की जिन्दगी का घोंसला भी ठीक ऐसा ही है।



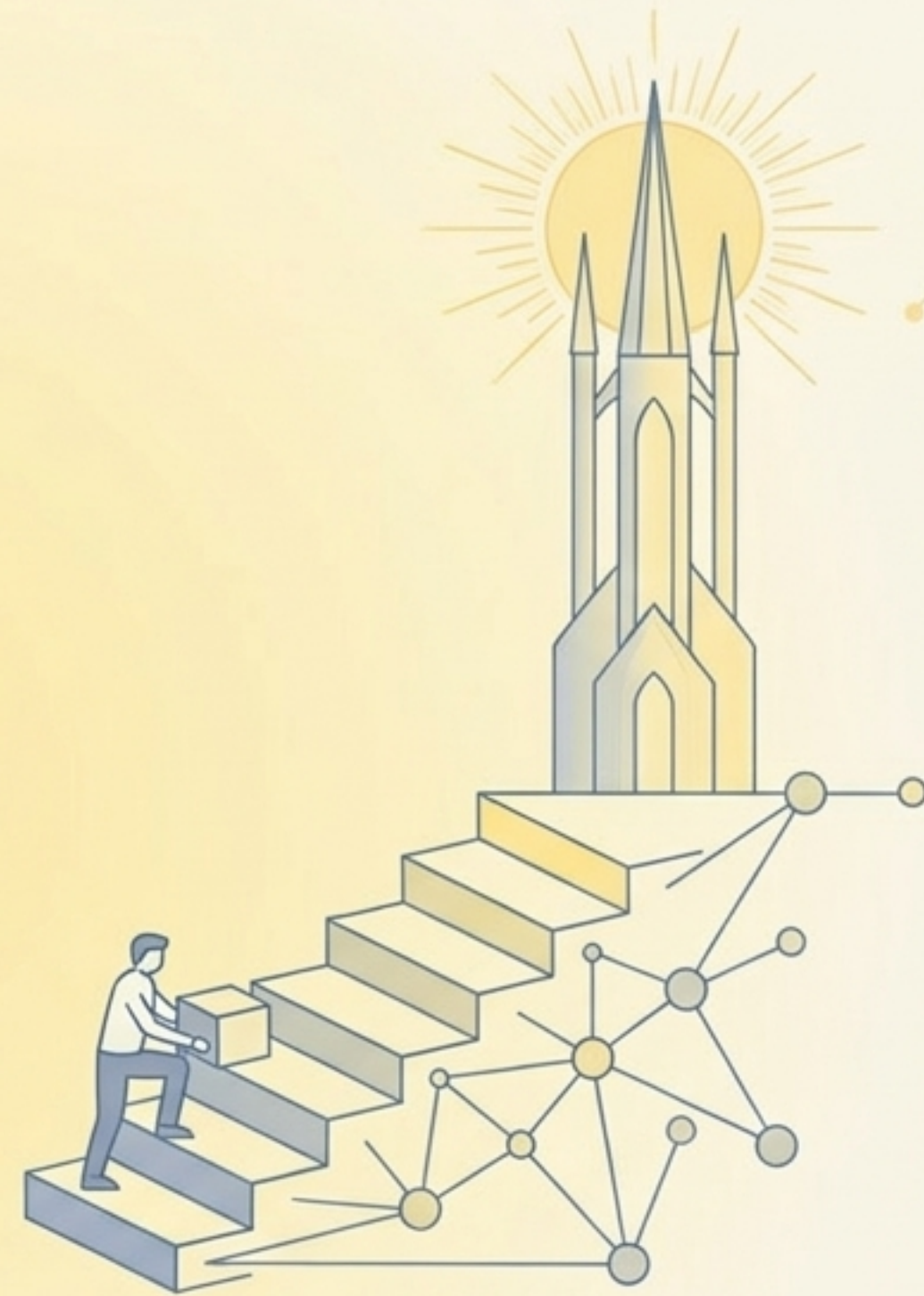
भाग्य का वास्तुकार

हर मनुष्य अपने लिए अपने स्तर की दुनिया अपने हाथों रचता है। वह चाहे तो गिरने के लिए खाई खोद सकता है, या उठने के लिए समतल सीढ़ियों वाली मीनार चुन सकता है।

मनुष्य
अपने भाग्य
का निर्माता
आप है



खाई

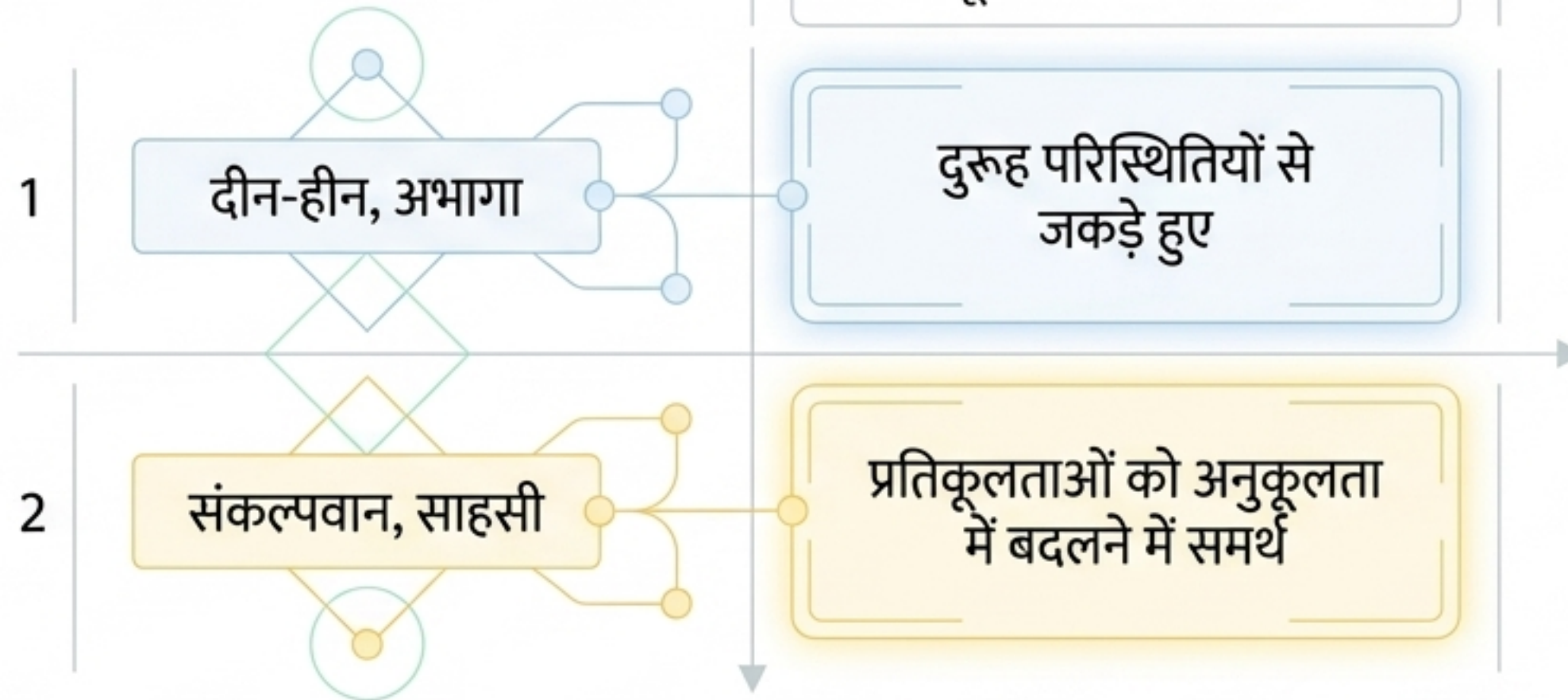


मीनार

मानसिकता का दर्पण - भाग १

व्यक्तित्व और कृतित्व को ऊँचा उठाने या गिराने के लिए केवल मनुष्य स्वयं उत्तरदायी है। अड़चनें और सुविधाएँ धूप-छाँव की तरह हैं, संकल्पवान के आगे कोई अवरोध नहीं टिकता।

मानसिकता का दर्पण



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा – जब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मानसिकता का दर्पण – भाग २

बिना मनोबल उठाए ऊपर से थोपी गई सहायता चिरस्थाई नहीं होती।
दीन-दुर्बलों को प्रकृति भी मुँह मोड़कर छोड़ देती है।



प्रकृति उपेक्षापूर्वक मरने
के लिए छोड़ देती है

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
गोलाकार तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



ईश्वर मात्र उन्हीं की सहायता करता
है, जो अपनी सहायता आप करते हैं

संकल्प का चुम्बकत्व

उत्कण्ठा का चुम्बकत्व अपने आप में इतना शक्तिशाली है कि उसके सहारे निश्चित रूप से प्रगति का पथ-प्रशस्त किया जा सकता है। बाहरी सहायता से पहले भीतर का पुरुषार्थ जाग्रत करना अनिवार्य है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब शरीर हीनर आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

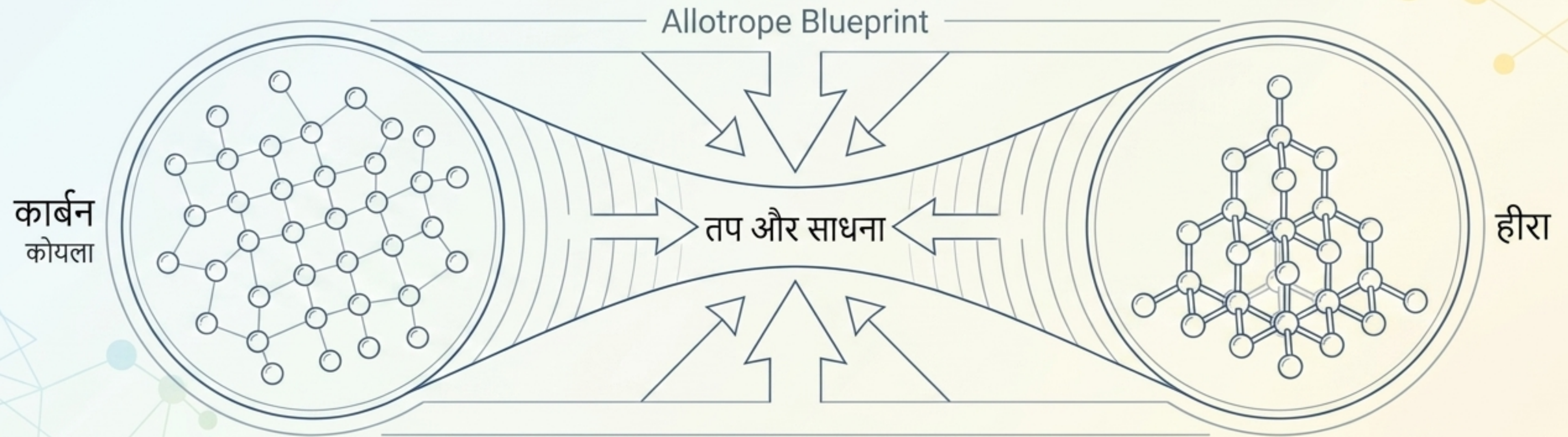
वेदान्त विज्ञान की ज्यामिति

वेदान्त के चार महत्वपूर्ण सूत्रों का एक ही वैज्ञानिक और आध्यात्मिक अर्थ है। मनुष्य और कुछ नहीं, मात्र भटका हुआ देवता है।



रूपान्तरण का रसायन

हीरा और कुछ नहीं, कोयले का ही परिष्कृत स्वरूप है।
यदि मनुष्य अपने ऊपर चढ़े मल-आवरण को उतार फेंके,
तो उसका अतुलित सौन्दर्य प्रकट होता है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा और आप सबसेग – में पहुँचना ही कि मेरे ज्ञान श्वे से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे बच्चों से कहियेगा पहुँचाने धामोब के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आत्मा की आसवन प्रक्रिया

भाप से उड़ाया हुआ पानी ही वह स्रवित जल है, जो इतना शुद्ध है कि जोखिम भरे कार्यों में प्रयुक्त होता है। विक्षेपों को दूर करने पर मनुष्य देवता बन जाता है।



अन्तःकरण का सौन्दर्य

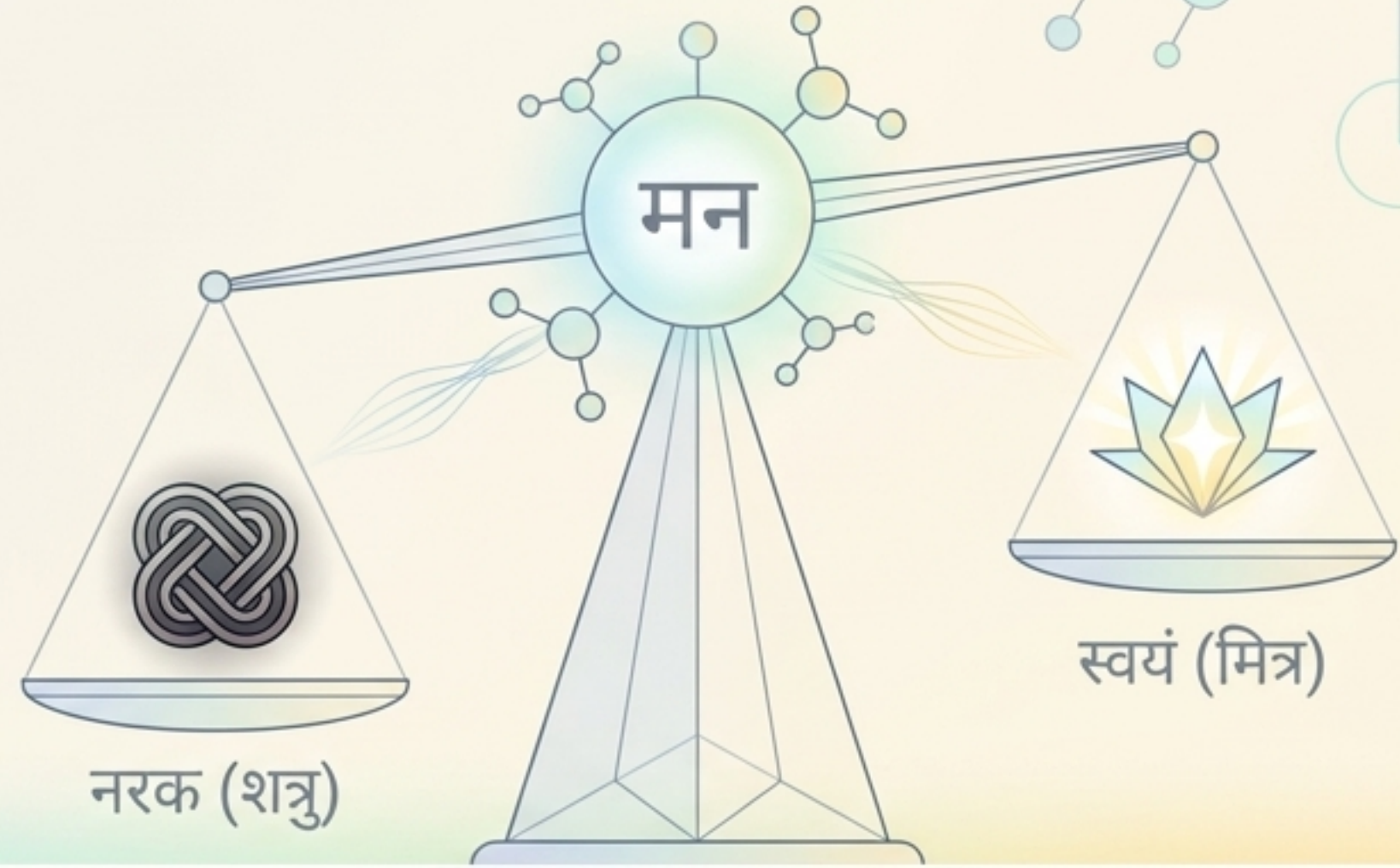
गाँधी और अष्टावक्र की दृश्यमान कुरूपता उनकी आकर्षकता और प्रभाव गरिमा में राई-रत्ती भी अन्तर न डाल सकी। जब अन्तःकरण निखरता है, तो बाहरी सौन्दर्य की कमी का कोई महत्त्व नहीं रह जाता।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे वन कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



मस्तिष्क का अन्तिम सत्य

गीताकार कहते हैं: “मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु है और मित्र भी। मन ही बन्धन और मोक्ष का एक मात्र कारण है।”
मनुष्य की एक मुट्ठी में स्वर्ग है और दूसरी में नरक;
वह किसी को भी खोलने के लिए स्वतंत्र है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सुधरें-सँभलें तो काम चले

‘अपने आप को ऊँचा उठाओ, उसे गिराओ मत।’
जो अपनी मानसिकता को परिष्कृत कर लेता है,
वह इस संसार के हाट-बाजार से कुछ भी मनचाहा प्राप्त
कर सकता है।

